शृङ्गारसुधातरङ्ग ।

(प्रथम भाग)

जिसे श्रीकृष्णचंद्रआनंदकन्दवृजचन्द्रकृपापात्राधिकारी पं॰ श्रीचौबे ठाकुर राधाचरनजू रईस जागीर पहरा ज़िला बांदा एजेंसी नयागांव मुल्क बुन्देलखण्ड ने श्री॰रसिकसिरोमणि वृजराज के गुणानुबाद का वर्णन रसिकजन और संगीत विद्या के अधिकारियों के बिनोदार्थ बसंत होरी भूला बधाई रेखता ठुमरी प्रभावती आदि अनेक मनोहर छन्दों में रच कर प्रकाश किया ।

और जिसे

शुभस्थान चौबेपुर निवासी द्विज पंडित तुलसीदासजी तस्यात्मज बनमालीलाल आफिसर पुलीस रियासत पहरा ने आदि से अन्त पर्यन्त अति उत्साह पूर्वक आज्ञानुसार लिख कर समाप्त किया ।

स्वामिरजायसु सीस धरि ललित छन्द रसखान ।
बनमाली निज कर लिख्यौ सुधातरङ्गसमान ॥

काशी

भारतजीवन प्रेस ।

संवत १९५१ ।

प्रथमबार] [५००